राज्य अध्याय 15

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए **प्रार्थना** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **2इतिहास 16,18,20 व 26**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (2इतिहास 16,18,20 व 26) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(3) इफिसियों 4:12-13**

दो-दो करके ***अवलोकन करें।***

(3) कलीसिया की सेवाकाईयां। इफिसियों 4:12-13। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम से के सब विश्वास और परमश्वेर के पुत्र की पहिचानमें एक न हो जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौलतक न बढ़ जाएं।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **दो पुत्र और फल रहित अंजीर का वृक्ष**

मत्ती 21:28-32 में "दो पुत्रों का दृष्टान्त"

और लूका 13:1-9 में "फल रहित अंजीर के वृक्ष का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में प्रेवश करने की जिम्मेदारी के बारे में बताता हैं।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

क. दो पुत्रों का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 21:28-32।

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी का समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

बढ़ती उम्र के बच्चों के साथ परिवारों का सबसे दुःखद अनुभव यह होता है कि, बच्चे अपने माता पिता की इच्छाओं को पूरा न करने की इच्छा प्रगट कर देते हैं। फिर भी, सबसे सुखद बात यह है कि ज़्यादातर बच्चे पछताकर बाद में उन्हीं कामों को करते हैं जो उनके माता पिता उनसे करने के लिए कहते हैं।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और " व्याख्या या अनुप्रयोग"हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः *कहानी के पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की *कहानी के बाद* में पाया जाता है।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की संरचना मत्ती 21:23-27 से बहुत घनिष्ठता से जुड़ी हुई है।

प्रधान याजक और इस्राएल के लोगों के पुरनियों ने यीशु द्वारा मन्दिर को शुद्ध करने और विशेष तौर पर मन्दिर परिसर में उपदेश देने और लोगों को चंगा करने के बारे में प्रश्न पूछा। उसने उन्हें उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा प्रश्न किया कि वे उसे बताएं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बपतिस्मा देने का अधिकार किसकी ओर से मिला था, स्वर्ग से या मनुष्य की ओर से? अपने मन की बात को सबके सामने प्रगट करने में रूचि न दिखाने से यह प्रगट हो गया कि वे कपटी हैं। उन्होंने ऐसा दिखाया मानों पता नहीं है, लेकिन हकीकत यह थी कि उन्हें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अस्विकार कर दिया था।

(2) दृष्टान्त की यह कहानी मत्ती 21:28-30 में लिखी हुई है।

(3) दृष्टान्त का अर्थ या उसका अनुप्रयोग मत्ती 21:31-32 में दिया गया है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर

भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

दाख की बारी। क्योंकि यह दृष्टान्त यह नहीं कहता कि "मेरी दाख की बारी" इसलिए इस विवरण को "इस्राएल देश"(परमेश्वर की दाख की बारी) नहीं कह सकते हैं।

पहला बेटा। वह हर उस व्यक्ति को दर्शाता है जो पहले अविश्वास और अनाज्ञाकारी होने से मन फिराता और बाद में विश्वास करने लगता है। यह दृष्टान्त का एक प्रासंगिक विवरण है।

दूसरा पुत्र। यह हर उस व्यक्ति को दर्शाता है जो आज्ञाकारी दिखता है, लेकिन वास्तव में एक अविश्वासी और अनाज्ञाकारी है।यह भी दृष्टान्त में एक प्रासंगिक विवरण है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 21:28-32 में दिया गया दो पुत्रों का दृष्टान्त हमें " परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करने की जिम्मेदारी के बारे में बताता है।"

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित हैं। "इससे कोई फरक नहीं पड़ता कि कोई जन पहले कोई अविश्वासी था, चुंगी लेने वाला था या कोई वैश्या थी, हर एक जन व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए जिम्मेदार है। वह खुद इस बात का जिम्मेदार है कि वह अपने पुराने अनाज्ञाकारिता के जीवन से पश्चाताप करे और फिर जाकर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करें।

परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का दिखावा करना, लेकिन वास्तव में वैसा करना, कपट है। वे लोग उस बीज के समान हैं जो पथरीली भूमि पर गिरा, और जल्दी ही मुर्झा गया, या उस व्यक्ति के समान है जो बिना विवाह के कपड़ों के विवाह समारोह में चला गया और जिसे उठाकर घोर अन्धकार में डाल दिया गया।

परमेश्वर के राज्य में व्यक्तिगत जिम्मेदारी एक बुनियादी विशेषता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई जन पहले अविश्वासी था, सन्देह करने वाला था, आलोचक था या उसने कोई छोटा या बड़ा पाप किया है, *परमश्वेर के राज्य में सच में प्रवेश करने वाले लोगों ने पश्चाताप किया और अब वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहे हैं!*

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्याशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व चर्चा करें। ये अनुच्छेद दृष्टान्त में बताये गये शिक्षा को कैसे प्रगट करते हैं?
ध्यान दें।

1शमूएल 15:22-23। राजा शाऊल ने केवल परमेश्वर की आज्ञा के *केवल आधे भाग का ही पालन किया।* उसने दुश्मन को तो समाप्त कर दिया लेकिन उसने, उसकी सम्पत्ति को नष्ट नहीं किया। वरन वह लूट पर टूट पड़ा और राजा अमालेक की बुराई को फैलाया। शमूएल भविष्यद्वक्ता ने उस से कहा "सुन माना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख बलवा करना और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।" क्योंकि राजा शाऊल ने परमेश्वर के वचन को तुच्छ जाना, इसलिए परमेश्वर ने भी उसे राजा होने के लिए तुच्छ जाना है। यह उन सभी अगुवों के लिए एक गम्भीर चेतावनी है जो ऊंचे पदों पर हैं लेकिन परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करते या उसकी इच्छा के आधा अधूरा पूरा करते हैं।

मत्ती 7:21-27; 23:1-4। कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने मुंह से यह तो कहते हैं कि वे परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और अपनी तरह से ऐसे कार्य करते हैं, जिससे निश्चय ही परमेश्वर परमेश्वर होते होगें। लेकिन वे परमेश्वर की प्रगट इच्छ को(जो बाइबल में प्रगट है) पूरा नहीं करते। वे प्रभु की इच्छा को सुनते और जानते हैं, लेकिन वे कभी पिता की इच्छा का अपने जीवन में अभ्यास नहीं करते। जिन लोगों को बाइबल का अधिक ज्ञान है, लेकिन वे उसके अपनुसा अपना जीवन नहीं बिताते, उनके लिए यह एक गम्भीर चेतावनी है।

यूहन्ना 15:14; प्रेरितों 5:29। जितने लोग, यीशु के कहे अनुसार कार्य करते हैं, वे उसके मित्र कहलाते और पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं। सबसे बढ़कर परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम बदलकर यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करें (यूहन्ना 3:16, 36; 6:29)

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा को सारांश बताएं।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है?यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या समझाने या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना अति आवश्यक है।

चुंगी लेने वालों को यहूदी लोग और खास तौर पर उनके धार्मिक और राजनैतिक अगुवों के द्वारा तुच्छ और धृणित माना जाता था, क्योंकि वे लालची हुआ करते थे, और वह उनसे धन एंठने के लिए अन्याय करते और उनके शत्रुओं अर्थात उन पर हुकुम चलाने वाले रोमियों से मिले हुए होते थे। इस्राएल में चुंगी लेने वालों और वैश्याओं को अति धृणित व तुच्छ पापी के रूप में माना जाता था।

अगर उनका ऊधमी व पापमय जीवन यदि लगातार जारी रहे तो सच में वे कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगें (1कुरिन्थियों 6:9-10; प्रकाशितवाक्य 21:8,27)। सच कहें तो ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कोई आशा है।

लेकिन जब उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बातों को सुना, तो उन्होंने पश्चाताप किया। वे यूहन्ना के "धार्मिकता के मार्ग" से प्रभावित थे, जिसके अन्तर्गत वह अपनी धार्मिकता कार्यों के साथ साथ उसने अपने प्रचार के द्वारा लोगों से धार्मिक कार्य करने की मांग की (लूका 3:9-14)। उसने मांग की कि लोग अपने पापों से पश्चाताप करें और परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करें। चुंगी लेने वालों और वैश्याओं ने बड़ी संख्या में अपने पापों से पश्चाताप किया और यीशु मसीह पर विश्वास किया (1कुरिन्थियों 6:11)। परमेश्वर चुंगी लेने वालों और वैश्याओं के पश्चाताप और विश्वास को देखकर बहुत खुशी हुई (लूका 5:30 ; 19:10)।

(2) परमेश्वर की इच्छा पूरा करने का दिखावा करना कपट है।

यहूदियों को धार्मिक अगुवों को व्यवस्था का अच्छा जानकार माना जाता था और वे बाहरी तौर पर दिखाते थे कि वे हमेशा ही परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए इच्छुक रहते हैं। लेकिन वास्तव में वे केवल परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का दिखावा ही किया करते थे। उन्होंने परमेश्वर के संदेश वाहक यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अस्विकार किया और अब उन्होंने यीशु मसीह व उसकी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया, वरन वे तो घात करने की योजना बना रहे थे।

(3) इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश था कि

प्रारम्भ में अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के बावजूद पश्चाताप करें।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने बड़े पापी थे और आपने कितने खराब काम किये हैं। मन फिराएं (अर्थात, अपनी सोच को बदलें) यीशु मसीह की ओर फिरे और उस पर विश्वास करें। आप अपने सारे पापों की क्षमा प्राप्त करेगें और बच जाएगें (यशायाह 1:18; 55:7; मीका 7:18-19; लूका 23:40-43)!

ख. फल रहित अंजीर के वृक्ष का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 13:1-9।

1. दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें। अंजीर के पेड़ में फल आने के लिए सामान्यतः काफी लम्बा समय लगता है। इस अंजीर के पेड़ को मालिक की बारी में बोया गया था। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, क्योंकि इसका अर्थ केवल इतना सा था कि इससे पेड़ की अच्छी देखभाल की जाएगी। और जब अन्त में वह समय आ गया जब अंजीर के पेड़ से फल पाने की अपेक्षा की जानी चाहिए, मालिक उसके पास में फल पाने की चाह से गया। किसी अंजीर के पेड़ में फल को देख पाना आसान बात नहीं होती है क्योंकि फल पत्तों के नीचे छुपे और दबे हुए होते हैं। अगर कोई फलों को देखना चाहता है तो उसे पास आकर पत्तों को उठाकर देखना पड़ता है।

क्योंकि लगातार तीन वर्षों तक मालिक को पेड़ से कोई फल प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए उसने इसे

काटने का आदेश दिया। मालिक नहीं चाहता था कि वह पेड़ बेकार में ही दूसरे पेड़ पौधों के लिए जरूरी खनिज पदार्थों और नमी को ले ले।

उस दाख की बारी के रखवाले ने मालिक से कहा कि उसे उस पेड़ की देखरेख करने का एक और अवसर प्रदान किया जाए। वह उस पेड़ के आस पास की मिटटी की निराई करेगा और उस में थोड़ी खाद डालेगा। किसी उद्देश्य से, प्रभु यीशु ने यह नहीं बताया कि इस अंजीर के पेड़ में कभी फल आया था कि नहीं। इसका उत्तर श्रोतागढ़ों और पाठकों पर छोड़ दिया है। यीशु चाहते हैं कि हर एक जन इस कहानी का अनुप्रयोग अपने जीवन में करें।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) यह दृष्टान्त लूका 13:1-5 में लिखा हुआ है।
जबकि इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश हैः "पश्चाताप!" इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश हैः "अभी पश्चाताप करें!" लूका 13:2-3 में यीशु कहते हैं, "क्या तुम समझते हो कि ये गलीली, और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।"

(2) यह दृष्टान्त लूका 13:5-9 में दिया गया है।

(3) दृष्टान्त का अनुप्रयोग या उसका अर्थ अलग से नहीं समझाया गया है, लेकिन यह उसका अर्थ दृष्टान्त में ही समावेशित है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?
ध्यान दें।

पढ़ें मत्ती 21:18-22, 42-44; लूका 20:15-16; 21:20-24।
खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त में दी गयी कहानी में किये गये उल्लेख में से कौन सी बातें वास्तव में आवश्यक और प्रासंगिक हैं?
ध्यान दें।

इस दृष्टान्त को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना। कई बार, लोग दृष्टान्त में बतायी गयी कहानी के

प्रत्येक उल्लेख का एक खास मतलब निकालने का प्रयास करते हैं। इसे ही प्रतिकात्मक रूप, या एक दृष्टान्त को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना कहते हैं। उदाहरण के लिए जॉर्जी महान (540–604) ने इस दृष्टान्त का अर्थ कुछ इस तरह निकालः "मालिक" परमेश्वर है। वह तीन बार फल की तलाश में आशा। "पहली बार" परमेश्वर का आना उसकी व्यवस्था के दिये जाने से पहले था। उसके बाद उसने मनुष्य को यह समझ प्रदान की कि उस व्यवहारिक कारणों का ध्यान रखते हुए किस प्रकार अपने पड़ोसियों से व्यवहार करना चाहिए। "दूसरी बार" वह लिखित व्यवस्था के समय में आया। तब उसने मनुष्य को अपनी व्यवस्था सिखायी। "तीसरी बार" परमेश्वर अनुग्रह के तहत आया। उसके बाद उसने मानव जाति पर अपनी दया प्रगट की। "दाख की बारी की देखभाल करने वाले" कलीसिया के अधिकारियों को दर्शाते हैं। पेड़ों के चारों ओर "गढ़हा" खोदना उन लोगों को डाटने को प्रदर्शित करता है जो फल लाने में असफल रहे होते हैं। "खाद" पाप को याद करने(और उसके अंगीकार करने) का प्रतीक है। जो लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने से इनकार करते हैं।

प्रतिकात्मक सार के आधार पर हम दिये गये सन्दर्भ के परिणाम तक नहीं पहुंच सकते इसलिए इसे अस्विकार कर देना चाहिए।

अंजीर का पेड़। एक टीकाकार कहता है कि "दाख की बारी में लगा हुआ अंजीर का पेड़" "इस्राएल में बसे हुए यरूशलेम" को दर्शाता है। लेकिन, जब हम मत्ती 21 में यीशु द्वारा अंजीर के पेड़ को देखते हैं, तो दाख की बारी में लगाया गया "अंजीर का वृक्ष" संसार में सर्वोच्च अवसर प्राप्त इस्राएल देश का प्रतीक है। यीशु सिखाते हैं कि इस्राएल एक देश के रूप में न तो परमेश्वर की ओर फिरा है और न ही उसने पश्चाताप किया है। "वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया (यूहन्ना 1:11)। जिसके परिणाम स्वरूप इस्राएल का एक धार्मिक व राजनैतिक सत्ता के रूप में और उद्धार पाये हुए लोगों के रूप में इस्राएल का दबदबा खत्मा हो गया। परमेश्वर का राज्य उनके हाथों से छीनकर ऐसे लोगों के हाथों में दे दिया गया जो परमेश्वर के राज्य में फल लाने वाले थे (मत्ती 8:11–12, मत्ती 21:41–43; रोमियों 11:17–24)। 70ई.पू में रोमियों द्वारा यरूशलेम और उसके मन्दिर को नाश कर दिया गया। इस तरह से इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में पूरी तरह से पतन हो गया। लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं था कि परमेश्वर ने सारे यहूदियों को अस्विकार कर दिया था। "परमेश्वर के लोगों" में अब इस्राएल के देश में रहने वाले और सारी अन्यजातियों में से मसीही लोग शामिल हैं। (1पतरस 2:9–10)।

तीन वर्षों का समय। इस काल का भी अलग अलग तरीके से अर्थ निकाला जाता हैः भिन्न टीका करने वालों के नज़रिये तीन वर्षों का अर्थ निम्नलिखित हैः

- इस्राएल का सम्पूर्ण इतिहास
- मसीह की तीन वर्षों की सेवाकाई
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवाकाई से प्रारम्भ होने वाला काल।

हालांकि, बाइबल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि हमें इन "तीन वर्षों को " कोई प्रतीकात्मक अभिप्राय देना चाहिए। इसलिए यह दृष्टान्त का विवरण प्रासंगिक नहीं है।

लेकिन अगर हम इस तथ्य पर गौर करें कि मालिक ने फल ने देने वाले पेड़ को तुरन्त नहीं काट दिया, इस सन्दर्भ में,लोगों के प्रति परमेश्वर के महान प्रेम और उसके धीरज को दर्शाता है, खास तौर पर इस्राएल के देश के प्रति।

दाख की बारी का उदारवादी रखवाला। यह एक प्रासंगिक विवरण है। वह निश्चय तौर पर परमेश्वर को प्रगट करता है जिसने बहुत धीरज के साथ में इस्राएल के लोगों के साथ व्यवहार किया। यहूदियों और गैरयहूदियों के प्रति परमेश्वर का महान धीरज आज भी बना रहता है। (लूका 4:18-21; 2पतरस 3:9)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 13:1-9 में दिया गया फलरहित अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी के बारे में बताता है।"

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "हर एक जन को तुरन्त मन फिराकर बिना विलम्ब किये यीशु मसीह के पास लौट आना चाहिए या वह हमेशा के लिए अपने प्राणो का नुकसान उठने के लिए तैयार रहे!"

व्यक्तिगत जिम्मेदारियां परमेश्वर के राज्य की बुनियादी जिम्मेदारियां हैं। परमेश्वर के राज्य के जिम्मेदार लोग महत्वपूर्ण निर्णय लेने में विलम्ब या देरी नहीं करते हैं। वे तुरन्त मन फिरा कर यीशु की ओर फिरते हैं, क्योंकि वे अपने प्राणों के नुकसान का जोखिम नहीं उठाना चाहते।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

चर्चा करें। किस प्रकार से बाइबल अंश में दी गयी शिक्षा की तुलना दृष्टान्त की शिक्षा से की जा सकती है?

ध्यान दें।

(1) यशायाह 55:6-7।

वहां पर लिखा है, "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।" हर एक जन यीशु को दिये गये अपने प्रतिउत्तर के प्रति जिम्मेदार है। वह स्वयं तब तक परमेश्वर को खोजने के लिए ज़िम्मेदार है जब तक कि परमेश्वर मिल सकता है। वह अपने जीवन में उस महत्वपूर्ण निर्णय को आज, अभी लेने के लिए जिम्मेदार है कहीं ऐसा न हो कि बहुत देर हो जाएं।

(2) 2 कुरिन्थियों 6:2।

वहां पर लिखा है, "देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो अभी वह उद्धार का दिन है।" हर एक व्यक्ति तुरन्त यीशु मसीह को प्रतिउत्तर देने के लिए जिम्मेदार है, क्योंकि यह परमेश्वर अनुग्रह का समय है, अभी वह उद्धार का दिन है।

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा को सारांश बताएं।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है?यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या समझाने या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें। इस दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा बिना देरी किये हुए यीशु की ओर फिरना है। हालांकि परमेश्वर अपने लोगों के साथ व्यवहार करने में बहुत धीरजवन्त है, लेकिन उसका धीरज सदा तक बना न रहेगाा। एक दिन– और केवल परमेश्वर ही जानते हैं कि वह दिन कब आयेगा– मन फिराने और बचने का अवसर खत्म हो जाएगा। जो मनुष्य फिर भी विलम्ब करता रहे "वह अपने पापों में मरेगा" (यूहन्ना 8:24) और वह हमेशा के लिए नाश हो जाएगा (अर्थात् प्रकाशितवाक्य के आधार पर डरपोक और अविश्वासी)। इसलिए देरी न करें! यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें!

ग. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की ज़िम्मेदारी से सम्बन्धित मुख्य शिक्षा या दृष्टान्तों की शिक्षाओं का सार

शिक्षा दें। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी धरती पर रहने वाले हर एक जन की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। कोई भी दूसरा जन हमारे लिए इस जिम्मेदारी को नहीं उठा सकता है। कोई भी जन दूसरे व्यक्ति के लिए मसीही को अपनाने तथा उस पर विश्वास करने का निर्णय नहीं ले सकता। कोई भी जन अपने निर्णय के परिणाम के लिए किसी और को दोषी नहीं ठहरा सकता। परमेश्वर हर जन के द्वारा लिये गये निर्णय और निर्णयों के परिणाम के लिए स्वयं उसे ही जिम्मेदार ठहरायेगा। अतः निम्नलिखित दृष्टान्त हर एक जन को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से सम्बन्धित निजी जिम्मेदारी के बारे में बताते हैं:

(1) बाजार में बैठे हुए बच्चों को दृष्टान्त (मत्ती 11:16–19)।

हर एक जन परमेश्वर की बातों को अनसुनी करने का जिम्मेदार है। गैरजिम्मेदार और अनियमित व्यवहार बचकाना होता है। लोग (जिसमें मसीही लोग भी शामिल हैं) को बचकानी हरकतें छोड़ देनी चाहिए और अपनी बातों और अपने कामों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

(2) मौसम से जुड़े चिन्हों का दृष्टान्त (मत्ती 16:1–4)।

समय काल पर दिखाये जाने चिन्हों के प्रति उदासीन रहने के लिए हर एक जन खुद जिम्मेदार है। बदलते मौसम पर नजर लगाये रहने की बजाय, लोगों को (निश्चय ही उसमें मसीही लोग शामिल हैं) परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के प्रारम्भ होने के नये दौर से जुड़े चिन्हों पर नज़र लगाकर रखना चाहिए। यीशु से जुड़ी हुई महान घटनाएं, विशेष तौर पर उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान, इतनी महान और महत्वपूर्ण घटनाएं हैं कि हर एक जन को उसका प्रतिउत्तर जरूर देना चाहिए।

(3) दो पुत्रों का दृष्टान्त (मत्ती 21:28–32)।

हर एक जन परमेश्वर द्वारा प्रगट (बोली या बतायी गयी) उसकी इच्छा के प्रति उदासीन होने के लिए जिम्मेदार है। शुरूआत में अविश्वास और अनाज्ञारिता के बावजूद, लोगों को (निश्चय ही उसमें मसीही लोग शामिल हैं) मन फिराकर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहिए।

(4) फलरहित अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त (लूका 13:1-9)।

हर एक जन परमेश्वर द्वारा उसके जीवन में रखे जाने वाले धीरज के प्रति उदासीन होने के लिए जिम्मेदार है। यदि बीते हुए समय की समीक्षा करें तो, लोगों को (निश्चय ही उसमें मसीही लोग शामिल हैं) पश्चाताप करके अपने जीवन में फल लाना प्रारम्भ कर देना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर के धीरज की एक सीमा है और वह सदा तक धीरजवन्त बना नहीं रहेगा। एक समय ऐसा आएगा जब मन फिराने, उद्धार पाने या फल लाने के लिए बहुत देरी हो चुकी होगी (प्रकाशितवाक्य 6:12-17)

(5) जाल का दृष्टान्त (मत्ती 13:47-50)

यह जानना हर एक जन की जिम्मेदारी है कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय निश्चित और अटल है। इस तथ्य को जानकर हर एक व्यक्ति को अधिकायी से मन फिराकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर लेना चाहिए!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2इतिहास 32,33,34 और 36** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्यः प्रेरितों 20:28।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 4:17-25।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।